आदर्श प्रश्न पत्र – 2015–16

कक्षा – 10

समय : 3 घण्टे 15 मिनट **विषय – संस्कृत** **पूर्णांकः 70**

निर्देश : प्रारम्भ के 15 मिनट परीक्षार्थियों को प्रश्नपत्र पढ़ने के लिए निर्धारित हैं।

प्र01 **निम्नलिखित गद्यांशों में से किसी एक गद्यांश का हिन्दी में ससन्दर्भ अनुवाद कीजिये**–7

(क) नयनं नीतिः, नीतेरिमानि मूल्यानि नैतिक मूल्यानि। यथा संख्या कार्यकरणेन मनुष्यस्य जीवनं सुचारु सफल×च भवति सा नीतिः कथ्यते। इसयम् नीतिः केवलस्य जनस्य समाजस्य कृते एव न भवति, अपितु जनानां, नृपाणां समेषां च व्यवहाराय भवति। नीत्या चलनेन, व्यवहरणेन, प्रजानां शासकानां समस्तस्य लोकस्याणि कल्याणं भवति।

(ख) निरन्तरं वर्धमानया जनसंख्याया बहूनि वनान्यपि निगलितानि। पर्वता नग्ना कृताः। वृक्षेषु प्रतिक्षणं कुठाराघातः क्रियते। वृक्षाणां वनानां च अन्धान्धकर्तनेन वर्षासु भूक्षरणं जायेते। उर्वरकां मृत्स्नां वर्षाजलम् अपवाहयति, नदीनां तलानि उत्थालानि भवन्ति। येन जलप्लावनानि भवन्ति असंख्याता च सम्पत् प्रतिवर्षं नश्यति। नरीतटे स्थितानां नगराणाम् उत्तरोत्तर विवर्धमानं मालिन्यं महाप्रणालैर्नदीषु पात्यते येन ξαℜκλνृश्योऽपि सुधास्वाटुजला नद्यो स्थाने स्थाने अपेया अस्नानीया च जायन्ते।

प्र02 निम्नलिखित पाठों में से किसी एक पाठ का हिन्दी में सारांश लिखिए – 4

(क) संस्कृतभाषायाः गौरवम्

(ख) मदनमोहनः मालवीयः

(ग) कविकुलगुरु कालिदासः

प्र03 निम्नलिखित पद्यांशों में से किसी एक की संदर्भ सहित हिन्दी में व्याख्या कीजिए – 7

(क) पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम्।
मूढैः पाषाण–खण्डेषु रत्न–संज्ञा विधीयते।।

(ख) सत्यं ब्रूयात्प्रियं ब्रूयान्न ब्रूयात्सत्यमप्रियम्।
प्रियं च नानृतं ब्रूयादेष धर्मः सनातनः ।।

प्र04 निम्नलिखित में से किसी एक सूक्ति की संदर्भ सहित हिन्दी में व्याख्या कीजिए – 3

(क) एतेषां सर्ववृक्षाणां ◊दनं नैव कारयेत्।

(ख) ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधि गच्छति।

(ग) क्षुद्रेऽपि नूनं शरणं प्रपन्ने, ममत्वमुच्चैः शिरसां सतीव।

प्र05 निम्नलिखित में से किसी एक श्लोक का अर्थ संस्कृत में लिखिए – 5

(क) भासं पश्यसि यद्येनं तथा ब्रूहि पुनर्वचः।
शिरः पश्यामि भासस्य न गात्रमिति सोऽब्रवीत्।।

(ख) सर्वलक्षणहीनोऽपि, यः सदाचारवान्नरः।
श्रद्धधानोऽनसूयश्च, शतं वर्षाणि जीवति।।

प्र06 निम्नलिखित में से किसी एक पात्र का चरित्र–चित्रण हिन्दी में कीजिए – 4

(क) ''महात्मनः संस्मरणानि'' पाठ के आधार पर 'गांधी जी' का चरित्र–चित्रण कीजिए।

(ख) ''धैर्यधनाः हि साधवः'' पाठ के आधार पर 'बोधिसत्व' का चरित्र–चित्रण कीजिए।

(ग) ''वयं भारतीयाः'' पाठ के आधार पर 'आफताब' का चरित्र–चित्रण कीजिए।

प्र07 निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर संस्कृत भाषा में लिखिए – 5

(क) गरुडेन कः व्यापादितः ?

(ख) महात्मागान्धिनः मातुनमि किं आसीत्?

(ग) सुपारगः कः आसीत् ?

प्र08(क) 'अच्' अथवा 'इक' प्रत्याहार में आगत वर्णों को लिखिए। 1

(ख) 'उ' अथवा 'ध्' वर्ण का उच्चारण स्थान लिखिए। 1

प्र09(क) निम्नलिखित मे से किसी एक का सन्धि–विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नाम लिखिए 2

(*i*) देवार्चनम्

(*ii*) रामश्शेते

(*iii*) नमस्करोति

(ख) निम्नलिखित चार विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर लिखिए – 1

''वसुधैव'' में सन्धि है –

(*i*) यण् सन्धि (*ii*) गुण सन्धि

(*iii*) अयादि सन्धि (*iv*) वृद्धि सन्धि

प्र010(क) निम्नलिखित में से किसी एक शब्द का रूप लिखिए –

(*i*) 'सरित्' शब्द का तृतीया बहुवचन

(*ii*) 'नदी' शब्द का सप्तमी एकवचन

(*iii*) 'राजन्' शब्द का प×चमी द्विवचन

(ख) निम्नलिखित चार विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर लिखिए – 1

'भगवान्' किस विभक्ति एवं वचन का रूप है?

(*i*) तृतीया विभक्ति एकवचन

(*ii*) प्रथमा विभक्ति एकवचन

(*iii*) द्वितीया विभक्ति एकवचन

(*iv*) चतुर्थी विभक्ति द्विवचन

प्र011(क) निम्नलिखित में से किसी एक धातु का रूप लिखिए – 1

(*i*) 'दृश' धातु लृट लकार उत्तम पुरूष एकवचन

(*ii*) 'नी' धातु लोट लकार प्रथम पुरूष बहुवचन

(*iii*) 'स्था' धातु लङ् लकार उत्तम पुरूष एकवचन

(ख) निम्नलिखित में से सही विकल्प चुनकर लिखिए – 1

''वसेयुः'' किस लकार का रूप है?

(*i*) लृट लकार (*ii*) विधिलिङ् लकार

(*iii*) लट् लकार (*iv*) इनमें से कोई नहीं

प्र012(क) निम्नलिखित समस्त पदो में से किसी एक पद का समास–विग्रह कीजिए तथा समास का नाम लिखिए – 1

(*i*) आजीवनम्

(*ii*) नीलाम्बरः

(*iii*) शैलपुत्री

(ख) सही विकल्प चुनकर लिखिए – 1

''शताब्दी'' में समास है

(*i*) कर्मधारय

(*ii*) बहुब्रीहि

(*iii*) द्विगु

प्र013(क) निम्नलिखित रेखांकित पदों में से किसी एक में विभक्ति का निर्देश कीजिए – 1

(*i*) <u>वृक्षात्</u> पत्राणि पतन्ति।

(*ii*) <u>तिलेषु</u> तैलं विद्यते।

(*iii*) <u>राजमार्गम्</u> अभितः वृक्षाः सन्ति।

(ख) ''सा <u>लेखिन्या</u> लिखति'' – इस वाक्य के रंखांकित पद में कौन सी विभक्ति है? 1

(*i*) द्वितीया (*ii*) तृतीया

(*iii*) सप्तमी

प्र014 निम्नलिखित में से किसी एक में धातु और प्रत्यय लिखिए – 2

(*i*) पातुम्

(*ii*) गृहीत्वा

(*iii*) दर्शनीयः

प्र015 निम्नलिखित में से किसी एक में वाच्य परिवर्तन कीजिए – 2

(*i*) अहं विद्यालयं गच्छामि।

(*ii*) मया पत्रिका लिख्यते।

(*iii*) सः नयति।

प्र016 निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए – 6

(*i*) अध्यापक छात्र से प्रश्न पूछता है।

(*ii*) कोलाहल मत करो।

(*iii*) नीतिनिपुण लोग निन्दा करते हैं।

(*iv*) वह पिता के साथ विद्यालय जाता है।

(*v*) तुम पुस्तक लाओ।

(*vi*) अज्ञात जलाशय में स्नान नहीं करना चाहिए।

प्र017 निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर संस्कृत में आठ वाक्यों में निबन्ध लिखिए 8

(*i*) सदाचारः (*ii*) विद्या ददाति विनयम्

(*iii*) मम् प्रियः कविः (*iv*) जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

(*v*) पर्यावरण प्रदूषणम्

प्र018 निम्नलिखित में से किन्हीं चार का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए – 4

(*i*) कन्दुकेन (*ii*) कदा

(*iii*) फलानि (*iv*) पीत्वा

(*v*) आकाशे (*vi*) अधुना

(*vii*) सम्प्रति (*viii*) पश्यसि

हल

1. (क) **सन्दर्भः** प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य–पुस्तक ''संस्कृत'' ''गद्य–भारती'' में संकलित 'नैतिक मूल्यानि' नामक पाठ से उद्धृत है।

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश में नीति के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए नीतिमार्ग पर चलने की महत्ता को प्रतिपादित किया गया है।

अनुवाद : 'ले जाना' नीति कहलाता है। नीति के ये मूल्य ही नैतिक मूल्य कहलाते हैं। जिस मार्ग से कार्य करने से मनुष्य का जीवन सुन्दर और भली–भाँति सफल होता है, वह नीति कहलाती है। यह नीति केवल सामान्य मनुष्य और समाज के लिए ही नहीं है, बल्कि मनुष्यों और राजाओं आदि सभी के व्यवहार के लिए भी होती है। नीति के द्वारा चलने से, व्यवहार करने से, प्रजा का, शासकों का, सम्पूर्ण संसार का भी कल्याण होता है।

(ख) **सन्दर्भ** – प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक संस्कृत के गद्यखण्ड 'गद्य–भारती' में संकलित ''भारते जनसंख्या समस्या'' शीर्षक पाठ से उद्धृत है।

प्रसंग – प्रस्तुत गद्यांश में जनसंख्या–वृद्धि की समस्या एवं इसके दुष्परिणामों पर प्रकाश डाला गया है।

अनुवाद – लगातार बढ़ती हुई जनसंख्या से बहुत से वन भी नष्ट कर दिए गए। पर्वत वृक्षरहित (नग्न) कर दिए गए। वृक्षों पर प्रत्येक क्षण कुल्हाड़ी से प्रहार किया जा रहा है। वृक्षों और वनों को अन्धाधुन्ध काटने से वर्षा ऋतु में भूमि का कटाव हो जाता है। उपजाऊ मिट्टी को वर्षा का जल बहा ले जाता है। नदियों के तल कम गहरे हो जाते हैं, जिससे बाढ़ आती है और अरबों की सम्पत्ति प्रतिवर्ष नष्ट हो जाती है। नदी के किनारे पर स्थित नगरों की लगातार बढ़ती हुई गन्दगी बड़े नालों से नदियों में डाली जाती है, जिससे गंगा जैसी अमृत के समान शुद्ध जल वाली नदियाँ भी जगह–जगह न पीने योग्य और स्नान न करने योग्य हो जाती है।

2. सारांश

3. (क) **सन्दर्भ** – प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्य–पुस्तक 'पद्य–पीयूषम्' में संकलित 'सूक्ति–सुधा' शीर्षक पाठ से अवतरित है।

प्रसंग – प्रस्तुत श्लोक में जल, अन्न और सुन्दर वचन को ही वास्तविक रत्न बताया गया है।

व्याख्या – पृथ्वी पर जल, अन्न और सुन्दर (उपदेशपरक) वचन– ये तीन रत्न अर्थात् श्रेष्ठ पदार्थ हैं। मूर्ख लोगों ने पत्थर के टुकड़ों को रत्न का नाम दे दिया है। तात्पर्य यह है कि जल, अन्न और मधुर वचनों का प्रभाव समस्त संसार के कल्याण के लिए होता है, जबकि रत्न जिनके पास होते हैं, केवल उन्हीं का कल्याण करते हैं। अतः जल, अन्न और मधुर वचन ही वास्तविक रत्न हैं।

(ख) **सन्दर्भ** – प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्य–पुस्तक 'संस्कृत' के पद्य–खण्ड 'पद्य–पीयूषम्' के 'विद्यार्थीचर्या' शीर्षक पाठ से उद्धृत है।

प्रसंग – इस श्लोक में अप्रिय सत्य और प्रिय असत्य न बोलने का परामर्श दिया गया है।

व्याख्या – मनु का कहना है कि सत्य बोलना चाहिए। प्रिय बोलना चाहिए। अप्रिय अर्थात् बुरा लगने वाला सत्य नहीं बोलना चाहिए तथा प्रिय अर्थात् अच्छा लगने वाला झूठ नहीं बोलना चाहिए। यही शाश्वत् धर्म है।

4. (क) **सन्दर्भ** – प्रस्तुत सूक्ति हमारी पाठ्य–पुस्तक 'संस्कृत' के पद्य– खण्ड 'पद्य–पीयूषम्' वृक्षाणां चेतनत्वम्' पाठ से उद्धृत है।

प्रसंग – प्रस्तुत सूक्ति में महर्षि भृगु वृक्षों में चेतना होने के कारण उन्हें न काटने की ओर संकेत कर रहे हैं।

अर्थ – इन सभी वृक्षों को नहीं काटना चाहिए।

व्याख्या – सभी वृक्षों में जीवधारियों की तरह ही चेतना होती है। इसी कारण से वे सभी हमारी तरह ही सुख और दुःख का अनुभव करते हैं। अतः व्यर्थ काटकर उन्हें पीड़ा नहीं पहुँचानी चाहिए। वर्षा ऋतु में सभी पेड़–पौधों में नवजीवन और नवचेतना का संचार होता है। इसी समय वे सर्वाधिक वृद्धि करते हैं। अतः वर्षा ऋतु में तो उन्हें कदापि नहीं काटना चाहिए। वर्तमान समय में पर्यावरण का सन्तुलन बिगड़ रहा है, इसलिए उनकी रक्षा करना तो और भी आवश्यक हो जाता है।

(ख) **सन्दर्भ** – 'पद्य–पीयूषम्' के 'गीतामृतम्' पाठ (पूर्ववत्)।

प्रसंग – प्रस्तुत सूक्ति में भगवान श्री कृष्ण अर्जुन को उपदेष देते हैं कि ज्ञान से चिरशान्ति प्राप्त होती है।

अर्थ – व्यक्ति ज्ञान प्राप्त करके शीघ्र ही परम्शान्ति को प्राप्त करता है।

व्याख्या– इस संसार में अज्ञान ही दुःखों का कारण है और जबतक व्यक्ति दुःखों का अनुभव करता रहेगा, उसे शान्ति प्राप्त नहीं हो सकती। व्यक्ति को जैसे ही ज्ञान प्राप्त होता है और वह यह जान लेता है कि संसार के सभी सुखोंपयोग मिथ्या है, उनसे वास्तविक सुख–शान्ति की प्राप्ति नहीं हो सकती, तब वह परम शन्ति की प्राप्ति के लिए ईश्वर भक्ति में अपना समय लगाता है। संसार के सुखोपयोगों से उसे विरक्ति होने लगती है। जब व्यक्ति संसार से पूर्णरूपेण विरक्त होकर अपना सर्वस्व ईश्वर को समर्पित कर देता है, तब वह परमशान्ति का अनुभव करता है। इसीलिए ठीक ही कहा गया है कि ज्ञान ही परमशान्ति को प्रदान करने वाला है।

(ग) **सन्दर्भ –** 'पद्य–पीयूषम्' के 'नगाधिराजः' पाठ (पूर्ववत्)

प्रसंग – प्रस्तुत सूक्ति में कहा गया है कि यदि कोई क्षुद्र व्यक्ति उच्च आशय वाले व्यक्ति के पास जाता है तो वे उसके प्रति भी श्रेष्ठ पुरूष की तरह ही आत्मीयता प्रकट करते हैं।

अर्थ – क्षुद्र व्यक्ति के शरण में आने पर महान व्यक्ति उन पर भी सज्जनों के समान ही स्नेह करते हैं।

व्याख्या – महापुरूषों की शरण में छोटा–बड़ा या सज्जन–दुर्जन जो भी आता है, वे उस पर अत्यधिक ममता दिखलाते हैं। उनके मन में छोटे–बड़े, अपने–पराये और सज्जन–दुर्जन का भेदभाव नहीं होता है। नागाधिराज हिमालय इसका आदर्श उदाहरण है। दिन के समय अन्धकार उसकी चोटियों पर नहीं रहता है, वरन् उसकी गुफाओं के भीतर रहता है। कवि की कल्पना है कि अन्धकार ने सूर्य के भय से हिमालय की चोटियों से भागकर उसकी गुफाओं में शरण प्राप्त की है और उन्नत शिखरों वाले हिमालय ने भी तुच्छ अन्धकार को गुफाओं में शरण देकर उसकी सूर्य से रक्षा की है। यहाँ हिमालय को महान तथा अन्धकार को क्षुद्र बताया गया है। प्रस्तुत सूक्ति शरणागत की रक्षा के महत्व को भी प्रतिपादित करती है।

5. (क) **संस्कृतार्थ** – द्रोणाचार्यः अवदत् वत्स अर्जुन! चेत् त्वं केवलं भासं लक्ष्यम् एवं पश्यसि तर्हि मम प्रश्नस्य उत्तरं देहि 'किं त्वं सम्पूर्ण भासं पश्यसि? अर्जुनः प्रत्यवदत्– अहं तु केवलं भासस्य शिरः पश्यामि, न तु शरीरम्।

(ख) **संस्कृतार्थ** – मनुः महाराजः कथयति यत् यः नरः सर्वलक्षणैः हीनः अस्ति, पर×च सदाचारयुक्तः श्रद्धायुक्तः, ईर्ष्यारहितः च अस्ति, सः शतं संवत्सराणि जीवति।

6. चरित्र–चित्रण

7. (क) गरूडेन जीमूतवाहनः व्यावादितः।

(ख) तस्य (महात्मनः) मातुः नाम 'पुतलीबाई' आसीत्।

(ग) सुपारगः बोधिसत्वः आसीत्।

8. (क) अच् – अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ (स्वर)
इक् – इ, उ, ऋ, लृ

(ख) उच्चारण स्थान – ओष्ठ, दन्त

9. (क) देव + अर्चनम् – दीर्घ सन्धि
रामस् + शेते – श्चुत्व सन्धि
नमः + करोति – विसर्ग सन्धि

(ख) (*iv*) वृद्धि सन्धि

10. (क) (*i*) सरिद्भिः
(*ii*) नद्याम्
(*iii*) राजभ्याम्

(ख) (*ii*) प्रथमा विभक्ति एकवचन

11. (क) (*i*) द्रक्ष्यामि
(*ii*) नयन्तु
(*iii*) अतिष्ठम्

(ख) (*ii*) विधिलिꣳ लकार

12. (क) (*i*) जीवनस्य पर्यन्तम् – अव्ययीभाव समास
(*ii*) नीलः चासौ अम्बरः – कर्मधारय समास
(*iii*) शैलस्य पुत्री – षष्ठी तत्पुरूष

(ख) द्विगु समास

13. (क) (*i*) 'अपादाने प×चमी' सूत्र से वृक्षात् में प×चमी विभक्ति है।
(*ii*) 'आधारोऽधिकरणम्' – सप्तमी विभक्ति
(*iii*) 'अभितः परितः समया विकषा हा प्रतियोगेऽपि – द्वितीया विभक्ति

(ख) (*ii*) तृतीया

14. (*i*) 'पा' धातु, तुमुन प्रत्यय

(*ii*) 'ग्रह' धातु, क्त्वा प्रत्यय

(*iii*) दृश् धातु, अनीयर् प्रत्यय

15. (*i*) मया विद्यालयं गम्यते।

(*ii*) अहं पत्रिकां लिखामि।

(*iii*) तेन नीयते।

16. अनुवाद

(*i*) अध्यापकः छात्रं प्रश्नं पृच्छति।

(*ii*) कोलाहलं मा कुरू।

(*iii*) नीतिनिपुणाः जनाः निन्दां कुर्वन्ति।

(*iv*) सः जनकेन सह विद्यालयं गच्छति।

(*v*) त्वं पुस्तकम् आनय।

(*vi*) अज्ञाते जलाशये स्नानं न कुर्यात्।

17. निबन्ध

18. वाक्य प्रयोग –

(*i*) बालकाः कन्दुकेन क्रीडन्ति।

(*ii*) सः कदा पठति?

(*iii*) वृक्षात् फलानि पतन्ति।

(*iv*) सः जलं पीत्वा अत्र आगच्छत्।

(*v*) आकाशे बहवः नक्षत्राः सन्ति।

(*vi*) सः अधुना न पठति।

(*vii*) सः सम्प्रति कार्यं न करोति।

(*viii*) त्वं किम् पश्यसि?